महान स्वतन्त्रता सेनानी

चौधरी रणबीर सिंह

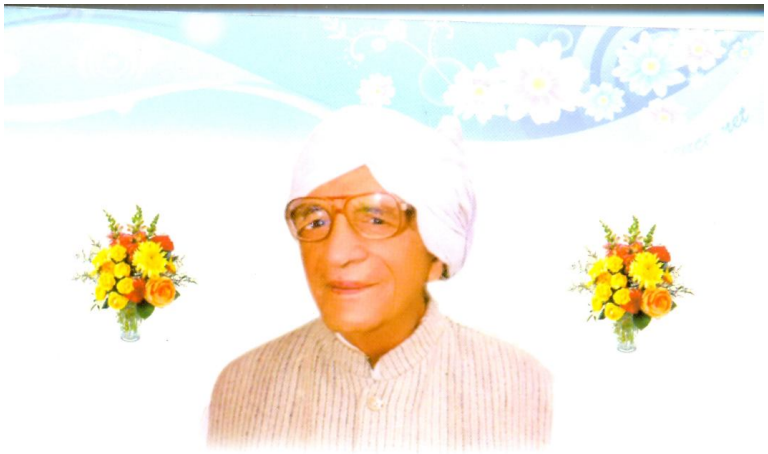

चौधरी रणबीर सिंह

(1914-2009)

चौधरी रणबीर सिंह विशिष्ट व्यक्तित्व के धनी और राष्ट्र की गौरवमयी 'शख्सियत थे। वे एक महान् स्वतंत्रता सेनानी, संविधान सभा के प्रबुद्ध सदस्य, सच्चे गाँधीवादी, कुशल राजनेता और परोपकारिता की प्रतिमूर्ति थे। स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान उन्होंने तीन वर्ष का कठोर कारावास और दो वर्ष की नजरबन्दी हंसते–हंसते झेली। वे लोकतंत्र के इतिहास में पहले ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने सात विभिन्न सदनों की 'शोभा बढ़ाई। उनका पूरा जीवन राष्ट्र–निर्माण, समाज–उत्थान एवं मानव–कल्याण के प्रति समर्पित रहा।

स्मृति में भारतीय डाक-टिकट जारी

स्व. चौधरी रणबीर सिंह की स्मृति में यूपीए अध्यक्षा श्रीमती सोनिया गाँधी ने 1 फरवरी 2011 को नई दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में पाँच रूपये का भारतीय डाक टिकट जारी किया। इस अवसर पर हरियाणा के मुख्यमन्त्री चौधरी भूपेन्द्र सिंह हुड्डा एवं केन्द्रीय संचार मंत्री श्री कपिल सिब्बल भी मौजूद थे।

चौ. रणबीर सिंह की स्मृति में जारी पाँच रूपये का भारतीय डाक टिकट ⇨

चौ.रणबीर सिंह CH. RANBIR SINGH

श्रीमती सोनिया गाँधी चौ. रणबीर सिंह की स्मृति में भारतीय डाक टिकट जारी करते हुए

"मैं एक देहाती हूँ,
किसान के घर पला हूँ
और परवरिश पाया हूँ।
कुदरती तौर पर उसका
संस्कार मेरे ऊपर है और
उसका मोह उसकी सारी
समस्याएँ आज मेरे
दिमाग में हैं।"

–चौधरी रणबीर सिंह

(भारतीय संविधान सभा 6 नवम्बर, 1948 को
अपने प्रथम भाषण में।)

प्रकाशक
चौधरी रणबीर सिंह पीठ
महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक।

चौधरी रणबीर सिंह

(संक्षिप्त जीवन परिचय)

जन्म

चौधरी रणबीर सिंह का जन्म 26 नवम्बर, 1914 को हरियाणा में रोहतक जिले के प्रसिद्ध गाँव सांघी में महान् आर्यसमाजी एवं देशभक्त चौधरी मातूराम के घर हुआ।

वह पैतृक हवेली, जिसमें चौधरी रणबीर सिंह जी का जन्म हुआ।

चौधरी रणबीर सिंह जी की पैतृक हवेली की छत से लिया गया गाँव सांघी का आवरण छायाचित्र।

पारिवारिक–पृष्ठभूमि

चौधरी रणबीर सिंह अपने माता–पिता, श्रीमती मामकौर एवं चौधरी मातू राम की तीसरी संतान थे। उनके दो बड़े बहन–भाई, डा. बलबीर सिंह व बहन सुश्री चन्द्रावती हुए और उनसे छोटे भाई चौधरी फतेह सिंह थे। चौधरी रणबीर सिंह के दादा जी का नाम चौधरी बख्तावर सिंह और दादी का नाम श्रीमती धन्नो देवी था।

पिताश्री पूज्य चौधरी मातू राम

माताश्री पूज्य श्रीमती मामकौर

पिताश्री चौधरी मातू राम का परिचय

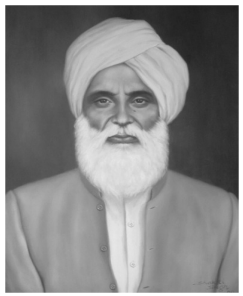

पूज्य चौधरी मातू राम

चौधरी मातू राम एक आदर्श देशभक्त एवं महान् आर्य समाजी थे। आपको पहले 1.12.1891 को गाँव का नम्बरदार, फिर 16.06.1892 को आला नम्बरदार और इसके बाद 6.11.1894 को सांघी जैल का जैलदार जैसा प्रतिष्ठित पद सौंपा गया। आपने 7 मार्च, 1911 को बरोणा, जिला रोहतक में समाज–सुधार के लिए हुई पंचायत के कुशल प्रबन्धन में हाथ बंटाया। इसमें विभिन्न खापों के 50,000 प्रतिनिधि शामिल हुये और समाज सुधार के लिये 28 प्रस्ताव पास करवाने में अहम् योगदान दिया।

आप रोहतक जिला कांग्रेस पार्टी के संस्थापकों में से एक थे, के प्रधान एवं जिला बोर्ड के सदस्य भी बने। आपने 1923 में विधान परिषद का चुनाव लड़ा, लेकिन भारी धांधली के चलते हार गये। न्यायालय में केस जाने पर फैसला आपके पक्ष में हुआ। लाला लाजपतराय, लाला मुरलीधर, सरदार अजीत सिंह (शहीदेआज़म भगत सिंह के चाचा), खान अब्दूल गफ्फार खाँ, पंडित मोतीलाल नेहरू, ठाकूर भार्गवदास, स्वामी श्रद्धानन्द जैसे अनेक जुझारू स्वतंत्रता सेनानियों के साथ आपके प्रगाढ़ संबंध थे।

स्वतंत्रता आन्दोलन में आपकी निरन्तर बढ़ती सक्रिय भागीदारी से अंग्रेजी सरकार ने परेशान होकर आपसे 4.05.1907 को जैलदारी पद छीन लिया। लेकिन आपने कदम पीछे नहीं हटाए। फिर सरकार ने आपको 'काला पानी' भेजने की तैयारी कर ली, लेकिन इससे जनता में भड़कने वाले अत्यन्त तीव्र आक्रोश को भांपकर सरकार को अपना यह विचार बदलना पड़ा।

स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान 16 फरवरी, 1921 को महात्मा गाँधी रोहतक पधारे तो चौधरी मातू राम की अध्यक्षता में आयोजित जनसभा में 25000 से अधिक लोगों ने भाग लिया। आपकी प्रतिष्ठित छवि की गाँधी जी ने भी भूरि–भूरि प्रशंसा की।

चौधरी मातू राम ने 'सत्यार्थ–प्रकाश' से प्रभावित होकर आर्य–धर्म अपना लिया और 'यज्ञोपवीत' (जनेऊ) धारण कर लिया। इसके विरोध में अंधविश्वासी एवं पाखण्डी लोगों को आपने अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा के बलपर बखूबी सबक सिखाया।

आपने शिक्षा के प्रचार–प्रसार के लिए अपना अनूठा योगदान दिया और 'जाट–एंग्लो संस्कृत हाई स्कूल, रोहतक' की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसके फलस्वरूप आपको संस्थापक प्रधान बनाया गया। इनके तीन पुत्र हुए : डा. बलबीर सिंह, चौधरी रणबीर सिंह और चौधरी फतेह सिंह।

शिक्षा

आर्य–समाज एवं राष्ट्रभक्ति के पारिवारिक वातावरण में बालक रणबीर का लालन–पालन हुआ। बाल्यकाल से ही वह राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रभक्ति, स्वदेश, स्वराज जैसे शब्दों से परिचित हो गया था। बालक रणबीर सिंह की शिक्षा–दीक्षा भी आर्य समाज की विचारधारा एवं देशभक्ति के वातावरण में पूर्ण हुई। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा छह वर्ष की उम्र में सन् 1920 में गाँव सांघी के ही प्राइमरी स्कूल से शुरू हुई। बाद में वर्ष 1924 में इन्हें भक्त फूल सिंह द्वारा भैंसवाल में संचालित गुरूकुल में दाखिल करवा दिया गया। उन्होंने वर्ष 1933 में वैश्य हाईस्कूल, रोहतक से दसवीं और वर्ष 1937 में दिल्ली के *रामजस कॉलेज* से बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की।

शिक्षा के बाद क्या ?

स्नातक (बी.ए.) की शिक्षा उत्तीर्ण करने के उपरान्त उनके सामने कैरियर का यक्ष प्रश्न खड़ा हो चुका था कि वे किस क्षेत्र को अपनाएं? वे नौकरी करें, वकालत करें या फिर खेतीबाड़ी का काम–धन्धा संभालें। काफी आत्म–मन्थन के उपरांत उनके पैतृक संस्कारों ने जोर मारा और उन्होंने निर्णय ले लिया कि 'पहले आजादी, बाकी सब बाद में।'

स्वतंत्रता आन्दोलन के लिए पिता की स्वीकृति

देशभक्ति के भावों एवं संस्कारों से कूट–कूट कर भरे युवा रणबीर सिंह ने आजादी के लिए स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेने का संकल्प ले लिया था, लेकिन इसके साथ ही पिता चौधरी मातूराम की स्वीकृति एवं उनके आशीर्वाद की भी आवश्यकता थी। जब आजादी के दीवाने इस सपूत ने पिता से अपने मन की बात कही तो राष्ट्रभक्त चौधरी मातूराम का चेहरा खिल उठा। पिता ने युवा रणबीर सिंह को सहर्ष स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेने का आशीर्वाद देने के साथ–साथ सीख देते हुए कहा, ''जा बेटा! ईश्वर तुझे सफलता प्रदान करे। सावधान रहकर, काम करना।''

ऐतिहासिक लाहौर अधिवेशन में भागीदारी

चौधरी रणबीर सिंह बचपन से ही देशभक्ति की भावना एवं संस्कारों से भरे हुए थे। घर में उन्हें राष्ट्रभक्ति का माहौल पैतृक विरासत के रूप में हासिल हुआ था। इन सबके चलते ही बालक रणबीर सिंह मात्र 15 वर्ष की आयु में अपने बड़े भाई के साथ 1929 के लाहौर कांग्रेस अधिवेशन में जा पहुंचे। इस ऐतिहासिक महाधिवेशन के अध्यक्ष पं. जवाहर लाल नेहरू थे। बालक रणबीर महात्मा गाँधी जी से बेहद प्रभावित थे। गांधी जी द्वारा उद्घाटित वैश्य स्कूल, रोहतक में शिक्षा अर्जित करते हुए बालक रणबीर देशभक्ति के कार्यक्रमों में भाग लेते थे। 26 जनवरी, 1930 को गाँधी जी के आह्वान पर देशभर में 'स्वराज दिवस' मनाया गया। रोहतक में आयोजित 'स्वराज दिवस' के कार्यक्रमों में युवा रणबीर सिंह ने बढ़चढ़कर भाग लिया।

A view of the Lahore Congress session, 1929

विवाह

चौधरी रणबीर सिंह का विवाह सन् 1937 में जीन्द जिले के गाँव डूमर खाँ में चौधरी हरद्वारी सिंह की सुपुत्री सुश्री हरदेई के साथ हुआ। चौधरी हरद्वारी लाल उच्च खानदानी एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। सुश्री हरदेई भी उच्च संस्कारों से युक्त थी।

चौधरी रणबीर सिंह अपनी धर्मपत्नी श्रीमती हरदेई के साथ

स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी

चौधरी रणबीर सिंह ने 1940 के दशक से ही राष्ट्रीय आन्दोलनों में अपनी सक्रिय भागीदारी दर्ज करवा दी थी। पिता चौधरी मातू राम से आजादी आन्दोलन में भाग लेने के उपरांत उनके मार्गदर्शनानुसार युवा रणबीर सिंह तत्कालीन रोहतक के जिला अध्यक्ष पं. श्री राम शर्मा के पास जा पहुँचे और अपने दिल की बातों से अवगत करवाते हुए कहा :

''मेरा इरादा है कि मैं कांग्रेस में शामिल होकर सत्याग्रह में भाग लूं। अतः आप मुझे जेल भिजवा दें, क्योंकि लोगों में यह भावना हो गई है कि पढ़े–लिखे जाट कुर्बानी नहीं कर सकते। शहर वाले प्रचार करते हैं कि पढ़े–लिखे किसान घराने से जो लोग आते हैं, वे कांग्रेस में लीडरी करने आते हैं। यदि उनको चौधर न मिले या पद न मिले तो वे भाग जाते हैं। इसलिए मुझे व्यक्तिगत सत्याग्रह में भाग लेनें दें। मैं केवल देशसेवा के लिए आया हूँ।''

युवा रणबीर सिंह की इस–भावना से अवगत होने पर पं. श्री राम शर्मा को बेहद खुशी हुई। उन्होंने उनकीं गौरवमयी पारिवारिक पृष्ठभूमि और देशभावना की कड़ी ललक को देखते हुए उसका पार्टी की सदस्यता के लिए निर्धारित पच्चीस पैसे का फार्म भरकर ऊपर स्वीकृति के लिए भेज दिया।

स्वतंत्रता आन्दोलन में पहली गिरफ्तारी

युवा रणबीर सिंह ने देश के लिए कुर्बानी देने के अपने दृढ़–संकल्प से रूबरू करवाने और शहरी लोगों में व्याप्त हो चुकी इस धारणा को कि, 'किसानों में से जो आते हैं, वे कुर्बानी कम करते हैं और नेता बनना चाहते हैं' को तोड़ने का पक्का मन बना लिया।

सत्याग्रही के तौरपर युवा रणबीर सिंह को उनके पैतृक गाँव सांघी से गिरफ्तार कर लिया गया और 5 अप्रैल, 1941 को एक साल की सजा सुना दी गई। उन्हें प्रारंभ में रोहतक जेल में रखा गया और बाद में जगह की कमी के चलते उन्हें पंजाब की फिरोजपुर जेल में भेज दिया गया।

पितृ–शोक

रणबीर सिंह के पिता चौधरी मातूराम का जुलाई, 1942 में स्वास्थ्य बड़ा नाजुक हो गया। ईलाज चला, लेकिन होनी को कौन टाल सकता है। अंततः आर्य समाज का यह पुरोधा 14 जुलाई, 1942 को इस नश्वर संसार को सदा–सदा के लिए अलविदा कह कर चल बसा। पिता के देहावसान ने युवा रणबीर सिंह को विचलित करके रख दिया। उनके दिल पर गहरा व असहनीय घाव लगा था। धीरे–धीरे वे संभले और सच्चे सत्याग्रही की भांति चित्त में स्थिरता धारण कर उन्होंने पहले की तरह स्वतंत्रता आन्दोलनों में बढ़चढ़कर भाग लेना जारी रखा।

स्वतंत्रता संग्राम में अनूठा योगदान

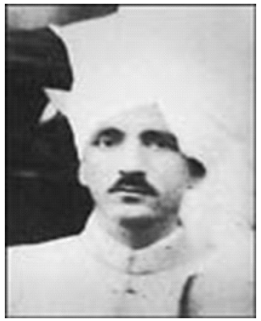

चौधरी रणबीर सिंह ने स्वतंत्रता संग्राम में अपनी अनूठी, अनुकरणीय एवं उल्लेखनीय भूमिका निभाई। उन्होने आजादी की जंग में कभी भी अपने कदम पीछे नहीं हटाए। उन्होंने अंग्रेजों द्वारा गोली मारने के आदेश को न केवल नजरअन्दाज किया, अपने तेवर और भी तीखे कर लिए थे। उन्होने 'हिन्दी–हरियाणा' नामक साप्ताहिक समाचार पत्र भी निकाला और अपनी पैनी कलम से जन–जन में आजादी के प्रति गहरी ललक जगाई।

चौधरी रणबीर सिंह पूरे देश को अपना परिवार मानते थे। जब मुल्तान जेल के दौरान उनकी आंखों में गहरा दर्द था, तो निजी मुलाकाती के तौरपर भाई व पत्नी के मिलने आने का सन्देश पाकर, उन्होंने आक्रोशित होकर दो टूक कह दिया था कि ''मेरा कोई निजी मुलाकाती नहीं है, सारा देश ही मेरा निजी है।''

जेल–यात्राएं

स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान एक सच्चे स्वतंत्रता सेनानी के रूप में चौधरी रणबीर सिंह कई बार जेल गए।

वर्ष	विवरण
1941 (5 अप्रैल)	: पहली बार जेल गए(व्यक्तिगत सत्याग्रह)
1941(24–25 मई)	: जेल से रिहा हुए।
1941	: दूसरी बार जेल गए।
1941 (24 दिसम्बर)	: जेल से रिहा हुए।
1942 (24 सितम्बर)	: तीसरी बार जेल (भारत छोड़ो आन्दोलन)
1943 (25 अप्रैल)	: मुल्तान से लाहौर जेल में भेजे गए।

वर्ष	विवरण
1944 (24 जुलाई)	: जेल से रिहा।
1944 (28 सितम्बर)	: चौथी बार जेल (नजरबन्दी उल्लंघन)
1944 (7 अक्तूबर)	: रोहतक जेल से अम्बाला जेल भेजे।
1945 (14 फरवरी)	: जेल से रिहा हुए।
1945	: पुनः गिरफ्तार करके जेल भेजे।
1945 (18 दिसम्बर)	: जेल से रिहा हुए।

कुल मिलाकर चौधरी रणबीर सिंह ने स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान रोहतक, हिसार, अम्बाला, फिरोजपुर, मुल्तान, स्यालकोट तथा केन्द्रीय व बोर्स्टल जेल लाहौर सहित आठ जेलों की यात्राएं करते हुए कुल साढ़े तीन वर्ष की कठोर कैद की सजा झेली।

नज़रबन्दी की सजा

चौधरी रणबीर सिंह ने स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान धारा 129 डी.आई.आर. के तहत नज़रबन्दी की सजा को भी झेला। झज्जर के चुनावों में नज़रबन्दी का उल्लंघन करके पार्टी के प्रचार के लिए जाने पर उन्हें 23 सितम्बर, 1944 को नज़रबन्दी उल्लंघन के आरोप में गिरफ्तार करके जेल भेज दिया गया। कुल मिलाकर चौधरी रणबीर सिंह स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान दो वर्ष नजरबन्द रहे।

स्वतंत्रता की सौगात

चौधरी रणबीर सिंह जैसे असंख्य देशभक्तों की कुर्बानियों और सरदार भगत सिंह जैसे अनगिनत वीरों की शहादतों के उपरांत अंततः 15 अगस्त, 1947 को भारत एक स्वतंत्रता राष्ट्र के तौर पर उभरा।

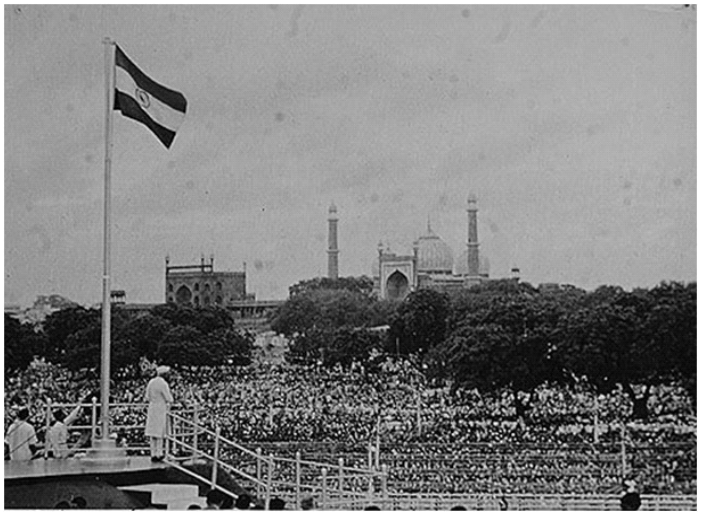

चौधरी रणबीर सिंह के शब्दों में, ''हमारे सरीखे लोखों छोटे–बड़े लोगों की कुर्बानी आखिर रंग लाई। स्वराज के सुनहले, सुमधुर स्वर कानों में पड़े। रोम–रोम पुलकित हो उठा।''

साम्द्रायिकता का दंश

देशभक्तों के असंख्य त्याग, बलिदानों एवं शहादतों के उपरांत देश अंग्रेजी राज की गुलामी से मुक्त हुआ और आजादी की सांस ली। देशभर में खूब खुशियां मनाईं गईं। चौधरी रणबीर सिंह भी बेहद खुश थे, लेकिन साथ ही दुःखी भी थे। देश विभाजन को लेकर भड़के साम्प्रदायिक दंगों के दंश ने देश में कोलाहल मचाकर रख दिया। चौधरी रणबीर सिंह की पीड़ा उनके इन शब्दों में बखूबी झलकती है :

'मन की मुराद पूरी तो हुई, लेकिन कुछ कसर रह गई। देश के टुकड़े हो गए। पंजाब भी बंट गया। बंटवारे के फौरन बाद जो हुआ उससे मन और भी खिन्न हुआ। कई बार जान जोखिम में डाल कर स्थिति को संभालने की कोशिश की पर नतीजा तसल्लीबख्स नहीं रहा।'

देश के बंटवारे के बाद भड़के दंगों पर काबू पाने के लिए चौधरी रणबीर सिंह ने दिन–रात शांति और सद्भावना की अलख जगाई। रोहतक और आस–पास के क्षेत्रों में उन्होने असंख्य निर्दोष लोगों की जान व माल की रक्षा की। रोहतक में स्थिति कुछ संभली तो वे मेवात (गुड़गांव) में पहुंच गए। वहां भी आग फैली हुई थी। गांधी जी सद्भावना मिशन पर रोहतक, पानीपत एवं मेवात पहुंचे। इसके बाद बेघर लोगों को बसाने की विकट समस्या देश के सामने थी। नित नयी समस्याओं से निपटने में भी चौधारी साहिब ने भरपूर प्रयास किए। विस्थापित लोगों की समस्याओं के निराकरण में उन्होंने स्वयं को लगा दिया। वे बीमार भी पड़ गए, लेकिन बेपरवाह जुटे रहे।

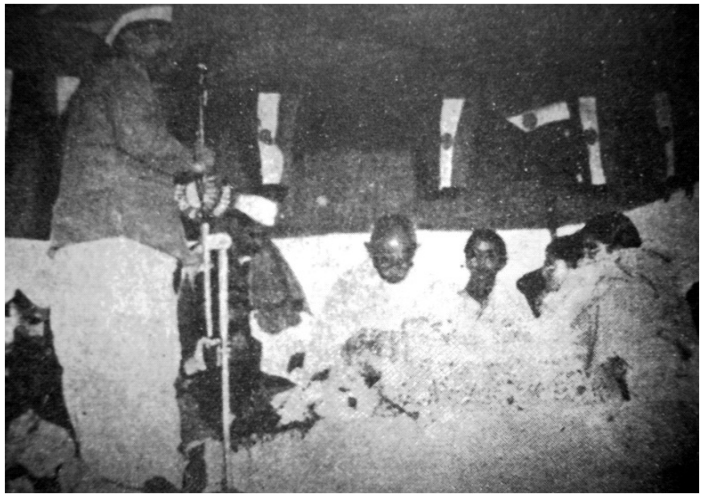

घासेड़ा (मेवात) में गांधी जी की सभा में चौधरी रणबीर सिंह

संविधान–निर्माण में योगदान

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात देश को अपने संविधान की जरूरत थी। संविधान निर्माण के लिए एक संविधान सभा का गठन किया गया। चौधरी रणबीर सिंह को उनके राष्ट्र के प्रति अटूट, अनूठी, अनुकरणीय सेवाओं, त्याग एवं बलिदानों को देखते हुए पंजाब (उस समय हरियाणा पंजाब में ही शामिल था) क्षेत्र से सदस्य के रूप में चुन लिया गया। उन्होंने *14 जुलाई, 1947* को विधिवत रूप से रजिस्टर पर हस्ताक्षर करके संविधान सभा की सदस्यता हासिल की।

भारत के संविधान की मूल हिन्दी प्रति पर चौधरी रणबीर सिंह के हस्ताक्षर

राष्ट्र के भविष्य का निर्माण करने वाली संविधान सभा में उन्होंने अस्सी प्रतिशत से अधिक देहात (गाँवों) में रहने वाले लोगों की बखूबी पैरवी की। उन्होंने जब 6 नवम्बर, 1948 को राष्ट्र की इस सर्वोच्च सभा को पहली बार संबोधित किया तो उनके हर शब्द में समाजोत्थान एवं देहातियों (ग्रामीणों) का दर्द छलक रहा था। उन्होंने अपने इस पहले ही भाषण में स्पष्ट कर दिया था, कि :

''मैं एक देहाती हूँ, किसान के घर पला हूँ और परवरिश पाया हूँ। कुदरती तौरपर उसका संस्कार मेरे ऊपर है। उसका मोह और उसकी सारी समस्याएं आज मेरे दिमाग में हैं।''

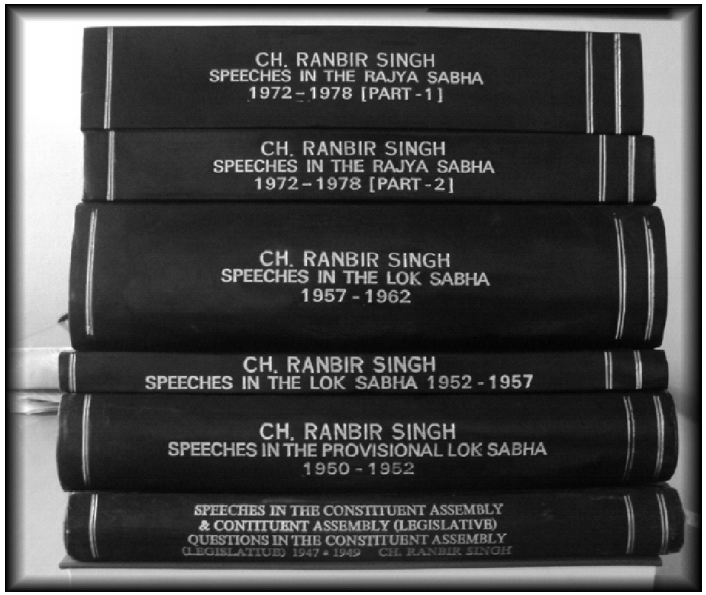

चौधरी रणबीर सिंह ने संविधान निर्माण के दौरान वर्ग विहिन समाज के निर्माण, सरकार में शक्ति के विकेन्द्रीयकरण, राष्ट्रभाषा हिन्दी बनाने, आरक्षण, सिंचाई व बिजली उत्पादन की कारगर योजनाओं के निर्माण, पशु–नस्ल सुधार, गो–वध पर पूर्ण प्रतिबन्ध, हर व्यक्ति के लिए रोटी–कपड़ा और मकान की व्यवस्था करने, आयकर की तर्ज पर कृषि पर 'कर' में छूट, छोटी जोतों को 'कर–मुक्त' करने, फसलों का बीमा करवाने, शहरी शिक्षा व्यवस्था के तुलनात्मक देहात शिक्षा पर जोर देने, लोकसेवा आयोग में ग्रामीण बच्चों को कुछ ढ़ील देने जैसे अनेक ऐतिहासिक मसौदे पेश किए।

चौधरी रणबीर सिंह ने देश–प्रदेश तथा देहात की विभिन्न समस्याओं, किसानों, मजदूरों, दलितों, पिछड़ों, अल्पसंख्यकों आदि हर तबके की वास्तविक स्थिति से न केवल परिचित करवाया, अपितु उनके समाधान हेतु सुझाव भी संविधान सभा के समक्ष प्रस्तावित किए। अपने क्षेत्र व अपने लोगों की पैरवी की। उनके हर संबोधन में देहात का मर्म और गरीब व मजदूर लोगों का दर्द बखूबी झलकता है। एक तरह से वे आम जनमानस की आवाज बन गए थे।

संविधान सभा में दिए गए उनके अनेक सुझावों को राज्य के निदेशक सिद्धान्तों में शामिल किया गया और आगे चल कर कुछ सुझावों पर अमल भी किया गया।

सात सदनों के सदस्य

चौधरी रणबीर सिंह एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के इतिहास में सात अलग–अलग सदनों में मतदाताओं का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने 1947 से 1950 तक संविधान सभा के सदस्य, 1948 से 1949 संविधान सभा विधायिका के सदस्य, 1950 से 1952 अस्थाई लोकसभा के सदस्य, 1952 से 1962 पहली तथा दूसरी लोकसभा के सदस्य, 1962 से 1966 संयुक्त पंजाब विधानसभा के सदस्य, 1966 से 1967 और 1968 से 1972 तक हरियाणा विधानसभा के सदस्य और 1972 से 1978 तक राज्य सभा के सदस्य के रूप में विभिन्न सदनों के गौरवमय पदों की शोभा बढ़ाई।

अनुपम सौगातें

चौधरी रणबीर सिंह जिस भी पद पर रहे, उन्होंने हमेशा गरीबों, किसानों, मजदूरों, दलितों, पिछड़ों, असहायों आदि के कल्याण पर जोर दिया और एक से बढ़कर एक कल्याणकारी कदम उठाए। *रोहतक–गोहाना रेलमार्ग, खरखौदा हाई स्कूल, बसन्तपुर, बहुजमालपुर प्राथमिक स्कूल, गाँधी स्मारक गौरड़* आदि चौधरी रणबीर सिंह की महत्वपूर्ण देनों में से हैं। उन्होने गांव *पोलंगी* तथा *बिधलान* में प्राइमरी स्कूलों के निर्माण में भी बड़ी उल्लेखनीय भूमिका निभाई। उन्होने ... *पर लाली'* लाने के ... पने अनूठे सद्प्रयासों ... युनिवर्सिटी) जैसी ... दिलवाई।

1952 का चुनाव जीतने के

मैडीकल कॉलेज, रोहतक (अब युनिवर्सिटी) →

हरियाणा निर्माण में योगदान

चौधरी रणबीर सिंह ने हरियाणा प्रदेश के नव–निर्माण एवं उसके उत्थान में बड़ा ही उल्लेखनीय योगदान दिया। उन्होने 18 नवम्बर, 1948 को संविधान सभा में अपने संबोधन के दौरान हरियाणा प्रान्त के निर्माण का मुद्दा बड़े जोर–शोर से उठाया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा :

'सच यह है कि अगर हरियाणा प्रान्त बनता, जैसे अंग्रेजों के समय में भी जिस समय गोलमेज (राउन्ड टेबुल) कान्फ्रेंस का समय था, उस समय कारवेट स्कीम के मुताबिक एक नया प्रान्त बनाने की योजना थी। उस समय भी इस प्रान्त का कोई बड़ा नेता न था। इसलिये उस स्कीम को टारपीडो कर दिया गया।.....'

चौधरी रणबीर सिंह के दिल में हरियाणा के निर्माण की बेहद कड़ी कसक थी। इस सन्दर्भ में उनका मानना था कि 1857 की क्रांति के बाद हरियाणा को पंजाब में मिलाने का फैसला एकदम गलत था। जब आप पंजाब में मंत्री थे तब हरियाणा के पिछड़े क्षेत्र का आप विशेष ख्याल रखते थे – खासकर अपने महकमों में। इस से पंजाब के बहुत से भाई नाराज रहते थे। कई बार मुख्यमंत्री से भी खिंच जाती थी। लेकिन आप सदैव यह दलील देकर सबको चुप कर देते थे कि परिवार में गरीब और बीमार का विशेष ध्यान रखना पड़ता है, और हरियाणा को आपने दोनों ही स्थितियों में पहुंचा रखा है!

एक समय पर अलग हरियाणा के गठन का सवाल ने इस अवसर को गम्भीरता मांग जोर पकड़ने लगी तो द्र तथा स्थानीय नेतृत्व को ाब मन्त्रीमण्डल का सदस्य आपने हरियाणा के हितों की फाजिल्का के हिन्दी भाषी ाप ने मन्त्री रहते हुए विरोध के समक्ष इस सवाल पर डट र्ण फैसले हरियाणा के हित में करवाने में आप सफल हुए।

भाखड़ा बांध राष्ट्र को समर्पित

जब चौधरी रणबीर सिंह सन् 1962 में कलानौर से चुनाव जीतकर विधानसभा में पहुंचे तो उन्हें पंजाब मंत्रीमण्डल में बिजली व सिंचाई मंत्री बनाया गया। इस पद पर रहते हुए उन्होने भाखड़ा बांध के निर्माण को पूरा करवाया, जिसे प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने 22 अक्तूबर, 1963 को राष्ट्र को समर्पित किया।

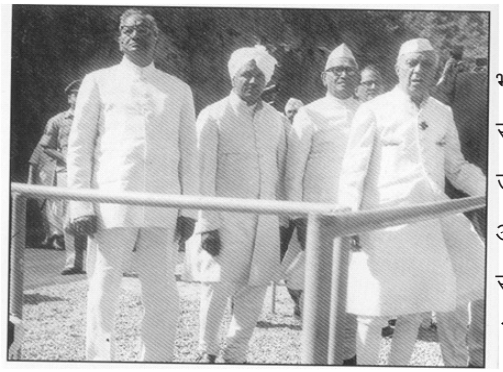

भाखड़ा बांध राष्ट्र को समर्पित करते हुए पं. जवाहर लाल नेहरू और साथ में हैं चौ.. रणबीर सिंह

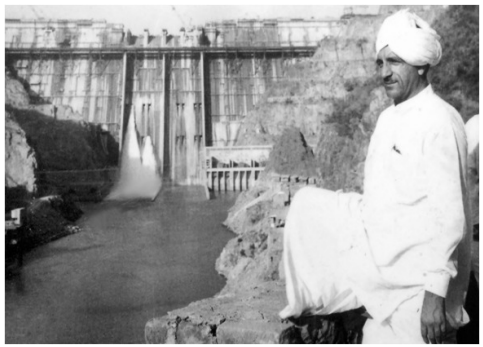

भाखड़ा बांध राष्ट्र का निरीक्षण करते हुए पंजाब के तत्कालीन बिजली एवं सिंचाई मंत्री चौ. रणबीर सिंह

बड़ी परियोजनाओं का निर्माण

चौधरी रणबीर सिंह ने पोंग बांध एवं ब्यास–सतलुज लिंक निर्माण के कार्य को भी शुरू करवाया, जिससे भाखड़ा से ब्यास का पानी मिलने में मदद मिली। इसी दौरान उन्होने पंजाब व उत्तर प्रदेश के बीच हुए यमुना जल के बंटवारे के समझौते में बड़ी दूरदर्शिता का परिचय देते हुए हरियाणा के हितों की रक्षा की। चौधरी रणबीर सिंह ने किशाऊ और रेणुका बांध योजनाओं की रूपरेखा भी तैयार की, जिसकी स्वीकृति हाल ही में भारत सरकार ने दे दी है। इसके अलावा गुड़गांव नहर योजना भी उन्ही के कार्यकाल के दौरान मंजूर हुई थी। चौधरी रणबीर सिंह की अटूट मेहनत एवं सच्ची लगन की बदौलत ही पंजाब एवं हरियाणा में हरित क्रांति सफल हो पाई थी। लुधियाना में कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना में भी उन्होने प्रशंसनीय योगदान दिया। जब वे हरियाणा निर्माण के उपरान्त पहले हरियाणा मंत्रीमण्डल में काबीना मंत्री बने, तब हरियाणा प्रदेश हर क्षेत्र में पिछड़ा हुआ था। उन्होने जिस उत्साह के साथ हरियाणा निर्माण में अपनी अहम् भूमिका निभाई थी, उससे कई गुना उत्साह के साथ हरियाणा की प्रगति एवं समृद्धि में अपनी अनुकरणीय भूमिका अदा की।

केन्द्र में विशिष्ट भूमिकाएं

चौधरी रणबीर सिंह कई बार केन्द्र में पहुंचे और अपनी विशिष्ट भूमिकाएं निभाईं। सन् 1947 में वे अस्थायी संसद के सदस्य, सन् 1952 और सन् 1957 का रोहतक लोकसभा से सांसद चुने गए। इसके बाद वे 4 अप्रैल, 1972 को राज्यसभा के सदस्य के रूप में फिर केन्द्र में पहुंचे। उन्होंने गाँव–देहात के गरीब, मजदूरों, किसानों आदि के कल्याणकारी कार्य निरन्तर जारी रखे। उन्होने स्वतंत्रता सेनानियों के लिए वर्ष 1972 में पेंशन मंजूर करवाई, जिसे प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने 1980 में इस पेंशन योजना को 'स्वतंत्रता सेनानी सम्मान पेंशन' का नया रूप दिया। बाद में उन्हीं के सद्प्रयासों से इस पेंशन की राशि में बढ़ौतरी हुई।

चौ. रणबीर सिंह प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी के प्रमुख विश्वास पात्रों में से एक थे। →

चौधरी रणबीर सिंह अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की कार्यकारिणी के सदस्य व कांग्रेस संसदीय दल (राज्यसभा) के उपनेता भी चुने गए। उनकी ईमानदारी, निष्पक्षता, उदारता एवं कर्मठता को देखते हुए वर्ष 1977 से 1980 तक हरियाणा प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष पद की महत्वपूर्ण जिम्मेवारी सौंपी गई।

चुनावी राजनीति से संन्यास

चौधरी रणबीर सिंह ने 65 वर्ष की आयु में सबको चौंकाते हुए एकाएक दृढ़–निश्चय किया कि अब सक्रिय [illegible] आए और शेष जीवन, जहां [illegible]गाया जाए। उनके शुभचिन्तकों [illegible]केन वे अपने फैसले पर अडिग [illegible]ति से सन्यास ले लिया।

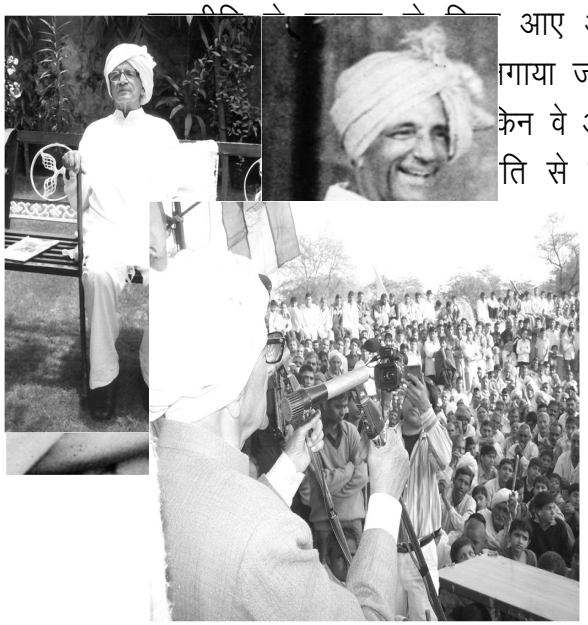

सक्रिय समाजसेवा

चौधरी रणबीर सिंह ने राजनीतिक क्षेत्र से संन्यास लेकर सक्रिय समाजसेवा के क्षेत्र में आ गए। वे समाज की सेवा करने के लिए हरियाणा सेवक संघ, पिछड़ा वर्ग संघ, भारत कृषक समाज, किसान सभा, हरियाणा विद्या प्रचारिणी सभा आदि अनेक सामाजिक संगठनों से जुड़े और जमकर लोगों की सेवा की। उनकी रहनुमाई में ही स्वतंत्रता सेनानियों के कल्याणार्थ अखिल भारतीय स्वतंत्रता सेनानी संगठन और अखिल भारतीय स्वतंत्रता सेनानी उत्तराधिकारी संगठन गठित हुए। इन संगठनों के प्रयासों से ही *1 लाख 63 हजार से स्वतंत्रता सेनानी एवं उनकी विधवाएं* सम्मान की जिन्दगी जी रहे हैं।

'डी.लिट् की उपाधि से विभूषित'

चौधरी रणबीर सिंह का पूरा जीवन राष्ट्र–उत्थान एवं समाज के नव–निर्माण के प्रति समर्पित रहा। उन्होने गरीबों, किसानों, मजदूरों, वृद्धों, महिलाओं आदि समाज के हर वर्ग के कल्याण के लिए अनेक कल्याणकारी कार्य किए। वे दिखावे से कोसों दूर थे। उन्होने अपने जीवन में कभी भी अपनी उपलब्धियों अथवा कार्यों का बखान व प्रचार–प्रसार नहीं करवाया और न ही स्वयं किया। राष्ट्र के प्रति उनकी अनमोल देनों को देखते हुए कुरूक्षेत्र विशविद्यालय कुरूक्षेत्र ने उन्हें वर्ष 2007 में डी.लिट की उपाधि से विभूषित किया।

स्वास्थ्य के दृष्टिगत चौ. रणबीर सिंह को 'डी–लिट्' उपाधि महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय में प्रदान की गई।

सुसंस्कारवान संतान

चौधरी रणबीर सिंह के यहां सुसंस्कारवान संतान के रूप में पाँच सुपत्र हुए :

1. कैप्टन प्रताप सिंह
2. श्री इन्द्र सिंह
3. श्री जोगेन्द्र सिंह
4. श्री भूपेन्द्र सिंह
5. श्री धर्मेन्द्र सिंह

चौधरी रणबीर सिंह एवं श्रीमती हरदेई ने अपने सभी पुत्रों को अच्छी शिक्षा दिलवाई और उन्हें ईमानदार, कर्मठ, परोपकारी, देशभक्त और समाजसेवी बनाया।

चौ. रणबीर सिंह एवं श्रीमती हरदेई अपने सपुत्र भूपेन्द्र सिंह (मुख्यमंत्री, हरियाणा) के साथ।

पीढ़ी–दर–पीढ़ी समर्पित राष्ट्रसेवा

चौधरी रणबीर सिंह, उस गौरवमयी वंश की सशक्त कड़ी बने, जिसमें राष्ट्रसेवा में समर्पित पीढ़ी–दर–पीढ़ी जुड़ती चली जा रही हैं।

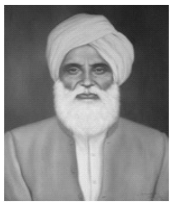

पहली पीढ़ी : चौधरी मातू राम आर्य सांधी गाँव के नम्बरदार और जैलदार जैसे प्रतिष्ठित पद पर रहे। वे रोहतक कांग्रेस के प्रमुख संस्थापकों में से एक और जिला बोर्ड के सदस्य भी रहे। 1921 में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के रोहतक पधारने पर हुई विशाल जनसभा की अध्यक्षता, उन्होंने ही की थी।

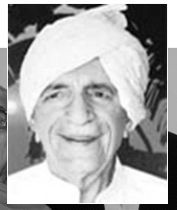

दूसरी पीढ़ी : चौधरी रणबीर सिंह ने स्वतंत्रता आन्दोलन में तीन वर्ष की कठोर कैद और दो वर्ष की नज़रबन्दी की सजाएं झेलीं। संविधान सभा के सदस्य चुने गए। लोकतंत्र के इतिहास में रिकार्ड़ सात विभिन्न सदनों के सम्मानित सदस्य बने।

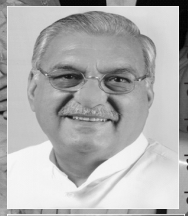

तीसरी पीढ़ी : चौधरी भूपेन्द्र सिंह हुड्डा 1991 में लोकसभा में पहुंचे। वे दसवीं, ग्यारहवीं और बारहवीं लोकसभा सदस्य रहे। उन्होंने 2005 में रिकार्ड़ मत लेकर किलोई विधानसभा से जीत दर्ज की और हरियाणा के मुख्यमन्त्री बने। उनके नेतृत्व में दूसरी बार 2009 में हरियाणा में कांग्रेस सरकार बनी है।

चौथी पीढ़ी : श्री दीपेन्द्र सिंह हुड्डा ने अपने पूर्वजों की विरासत को आगे बढ़ाते हुए दो बार वर्ष 2005 और 2009 में रिकार्ड़ मतों से रोहतक लोकसभा चुनाव जीता। चौदहवीं और पन्द्रहवीं लोकसभा में पहुंचे।

स्वर्गवास

महान् स्वतंत्रता सेनानी, देशभक्त, गाँधीवादी नेता चौधरी रणबीर सिंह का स्वर्गवास 1 फरवरी, 2009 को हो गया। पूरे देश ने नम आँखों से अश्रु–पूर्ण विदाई दी।

समाधि–स्थल

चौधरी रणबीर सिंह का समाधि–स्थल रोहतक में दिल्ली, रोड़ पर बनाया गया है। यहाँ पर उनकी आदम–कद प्रतिमा का अनावरण महामहिम राज्यपाल श्री जगन्नाथ पहाड़िया द्वारा 26 नवम्बर, 2010 को किया।

समाधि–स्थल पर चौधरी रणबीर सिंह को पुष्पांजलि।

चौधरी रणबीर सिंह की प्रतिमा का अनावरण करते हुए राज्यपाल महामहिम जगन्नाथ पहाड़िया।

राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का स्वागत करते हुए चौ. रणबीर सिंह

डेलीगेशन के साथ पं. जवाहर लाल नेहरू के कार्यालय में चौ. रणबीर सिंह

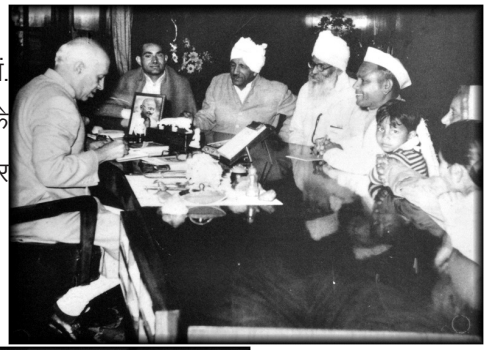

श्रीमती इन्दिरा गाँधी के साथ चौ. रणबीर सिंह

कांग्रेस अध्यक्ष श्री यू. एन. ढ़ेबर के साथ चौ. रणबीर सिंह

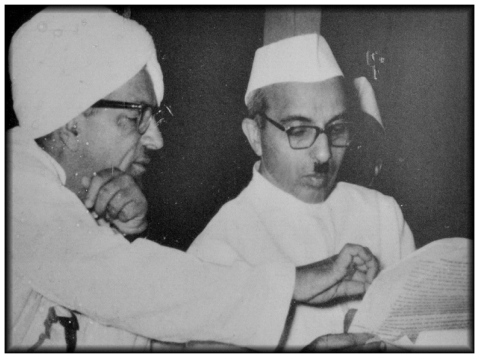

राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह के साथ चौ. रणबीर सिंह

श्री राजीव गाँधी के साथ चौ. रणबीर सिंह

राष्ट्रपति डा. जाकिर हुसैन के साथ चौ. रणबीर सिंह

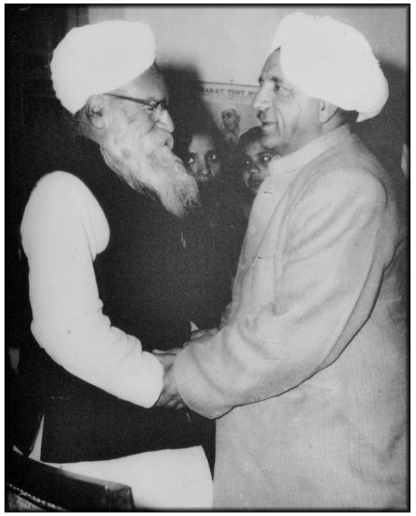

अकाली नेता मास्टर तारा सिंह के साथ चौ. रणबीर सिंह

दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति नेल्सन मण्डेला के साथ चौ. रणबीर सिंह

राष्ट्रपति श्री आर. कट रमन के साथ चौ. रणबीर सिंह

श्रीमती इन्दिरा गाँधी एवं अन्य नेताओं के साथ चौ. रणबीर सिंह

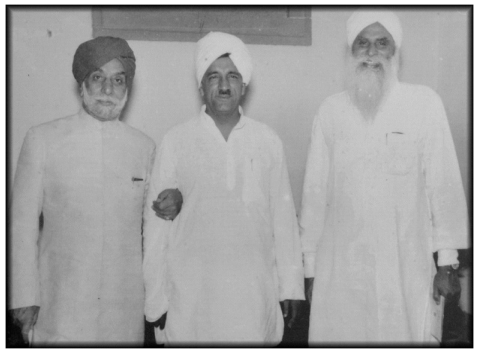

सरदार हुकम सिंह एवं ज्ञानी गुरूमुख सिंह के साथ चौ. रणबीर सिंह

श्रीमती इन्दिरा गाँधी एवं अब्दुल गफ्फार खान के साथ चौ. रणबीर सिंह

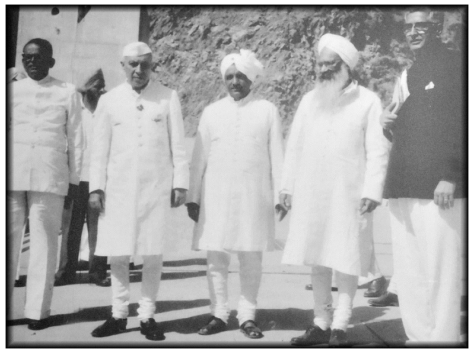

पं. जवाहर लाल नेहरू एवं प्रताप सिंह कैरों के साथ चौ. रणबीर सिंह

श्री वी.एन. गाडगिल को साथी नेताओं के साथ विदाई देते हुए चौ. रणबीर सिंह

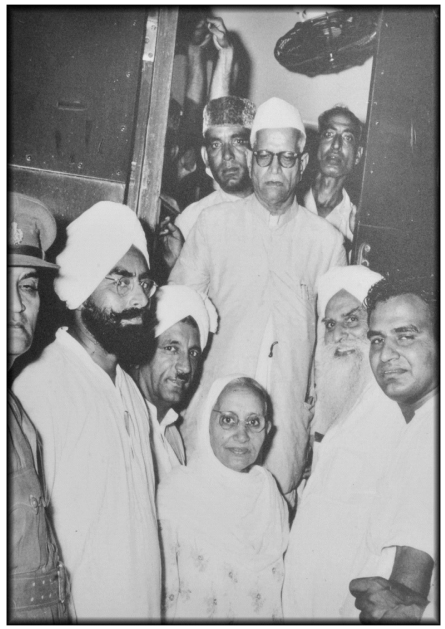

सन् 1952 की एक जनसभा को सम्बोधित करते हुए चौ. रणबीर सिंह

चौ. रणबीर सिंह को सम्मानित करते हुए राष्ट्रपति आर.के. नारायणन

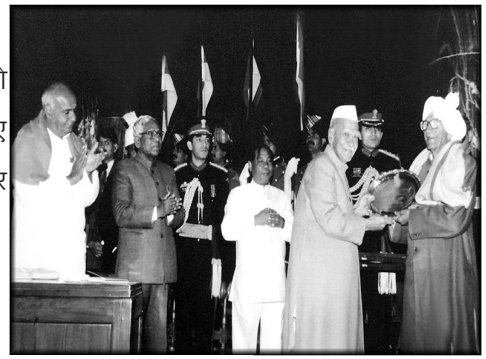

चौ. रणबीर सिंह को सम्मानित करते हुए राष्ट्रपति डा. शंकर दयाल शर्मा

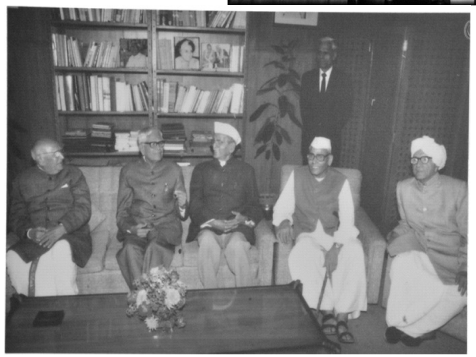

श्री आर. वेंकट रमन, प्रो. एन.जी. रंगा, श्री एम. द्विवेदी एवं अन्य नेताओं के साथ चौ. रणबीर सिंह

संविधान सभा के कक्ष में अपने सुपुत्र श्री भूपेन्द्र सिंह एवं स्वतंत्रता सेनानी श्री शीलभद्र याजी के साथ चौ. रणबीर सिंह

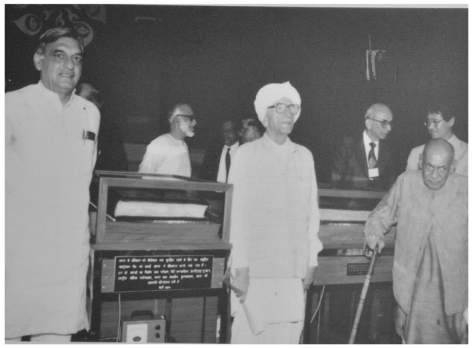

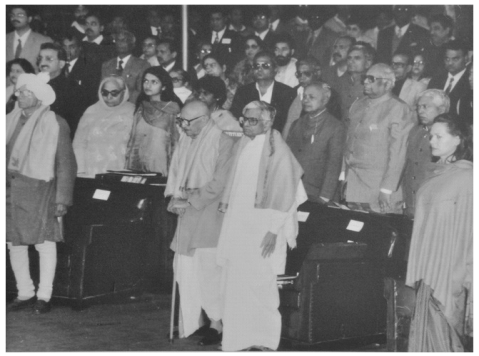

संविधान की स्वर्ण जयन्ति पर आयोजित विशेष सभा में देश के वरिष्ठ नेताओं के साथ चौ. रणबीर सिंह

श्रीमती सोनिया गाँधी चौ. रणबीर सिंह के पारिवारिक सदस्यों के साथ

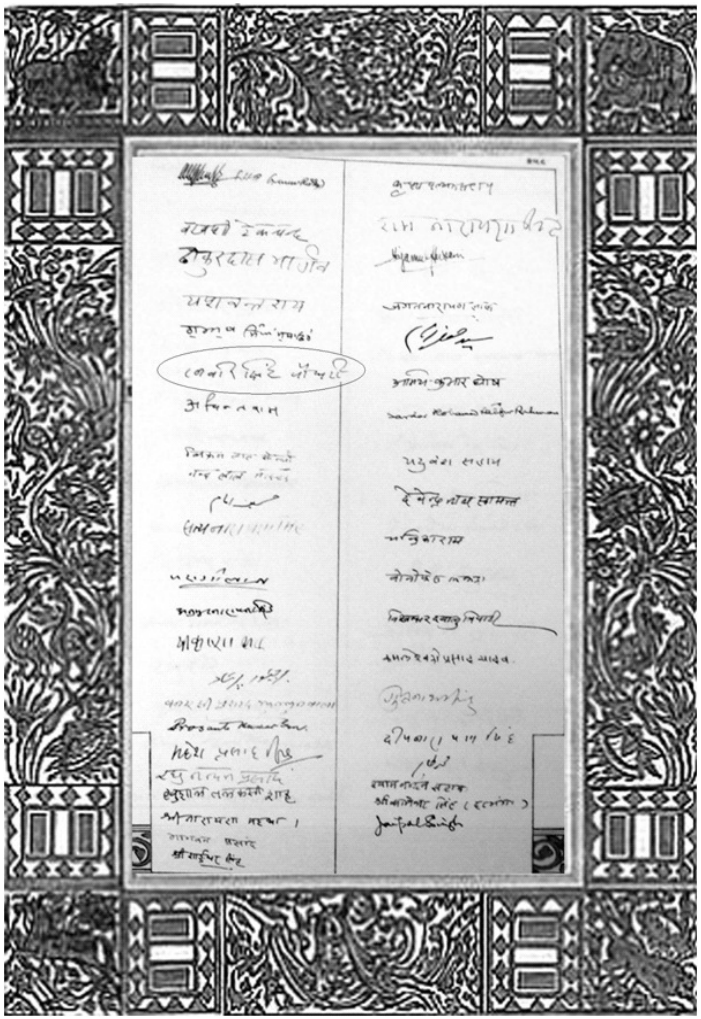

भारत के संविधान की मूल हिन्दी प्रति पर चौधरी रणबीर सिंह के हस्ताक्षर

संविधान निर्मात्री सभा के सदस्यों का सामूहिक छायाचित्र (साथ में हैं चौधरी रणबीर सिंह)